भजन

तर्ज–गुजरा हुआ जमाना आता नहीं दुबारा

गुजरा हुआ जमाना याद आया फिर दुबारा,
देखा था जो नजारा–2

1– महफिल सजी हुई थी,हम भी वहां पधारे
सबको पिला रहे थे,हमको किए इशारे
बस एक ही नजर में नजरों का तीर मारा

2– बैठक थी रात दिन की,बातें हजार होतीं
जो वक्त पे न पहुंची,वो जार जार रोती
अब याद आ रहा है गुजरा अतीत प्यारा

3– देखो वोह आ रहे हैं,हाथों में जाम लेकर
कोई रह न जाए बाकि,पूछें वो सबको देकर
हमसे रहा गया न फिर ले लिया दुबारा